दीवानी अनदेखे पति की

यह कहानी है 24 वर्षीया माला की. माला के गदराये बदन से भरपूर यौवन टपक रहा था. उसकी कॉलेज की पढाई पूरी हो चुकी थी. उसकी मम्मी, सरला को जब घर के लिए किसी सामान की जरुरत होती, तो वो माला को ही मार्किट भेजती, माला स्कूटी उठाती और सामान लाने के लिए मार्किट निकल पड़ती.

दिन के समय घर पर और कोई नहीं होता था, छोटी बहन श्रुति सुबह ही कॉलेज चली जाती थी और दोपहर के बाद ही घर आती थी, और खाना खा कर, कुछ आराम करके, वो टूशन चली जाती थी.

उसके डैडी सतीश सुबह ही ऑफिस के लिए निकल जाते थे.

फिर, माला ही बचती थी घर पर...

एक दिन, सतीश शाम को ऑफिस से आया, अपना बैग टेबल पर रख कर फ्रेश होने सीधा बाथरूम में चला गया. उसको आया देख कर सरला चाय बनाने किचन में चली गई. नैपकिन से हाथ सुखाते हुए सतीश आकर सोफे पर बैठ गया, इतने में उसका मोबाइल बज उठा. जेब से मोबाइल निकाल कर देखा तो उसके सहकर्मी मिस्टर सिन्हा का फोन था. उनकी वार्तालाप ज्यादा लम्बी नहीं चली.

सरला चाय ले आई, सरला ने चाय की ट्रे सतीश के आगे टेबल पर रख दी. चाय का कप हाथ में पकड़ते ही सतीश बोला, 'मेरी बेटी कहाँ है? दिखाई नहीं दी अभी तक?'

'मधु के घर गई है.' सरला ने बताया.

'अच्छा, अच्छा, ठीक है.' सतिश चाय की चुस्कियाँ लेने लगा.

सरला ने बताया कि माला आजकल गुमसुम सी रहने लगी है, हमेशा कुछ सोचती रहती है. सतीश ने सरला की बात पर खास ध्यान नहीं दिया, वो किसी को फोन मिलाने में व्यस्त हो गया. सरला उठ कर अपने कमरे में चली गई.

^

इधर,

माला और मधु बालकनी में आराम कुर्सी पर टांगें फैला कर बैठी हैं, सामने गार्डन में हरियाली देख कर माला का मन प्रसन्न हो रहा था, वो जब भी मधु के घर आती, तब यहीं बालकोनी में बैठ कर लम्बे समय तक गार्डन का मनोरम दृश्य देखती रहती. मधु मुस्कुराते हुए माला को देख रही थी.

'तेरी शादी को 6 महीने होने को आये है ना, मधु.' अचानक, गार्डन से ध्यान हटाते हुए उसने पूछा.

'हाँ, माला, देखो ना, वक़्त का पता ही नहीं चला.'

'अगर बुरा ना माने तो एक व्यक्तिगत सवाल पूछूँ?'

'अरे! तू मेरी बेस्ट फ्रेंड है, तू कुछ भी पूछ सकती है, मैं भला तेरी किसी बात का का बुरा मानूंगी? पूछ ना जो पूछना है.'

'तेरी मैरिज लाइफ कैसी है?'

'बहुत अच्छी है. ऐश कर रही हूँ. मनोज बहुत खुश रखता है, मुझे जॉब भी नहीं करने देता, कहता है पैसे की क्या कमी है.'

'और तेरी सेक्स लाइफ कैसी जा रही है?' माला ने हिम्मत करके पूछा.

माला के मुंह से यह सवाल सुन कर मधु चौंक गई, मधु ने एक क्षण के लिए माला के चेहरे को देखा, फिर बोली, 'सेक्स लाइफ? बहुत अच्छी जा रही है यार, क्यों? तू ऐसा क्यों पूछ रही है?'

'नहीं, नहीं, ऐसे ही, क्यों अच्छा नहीं लगा तुझे?'

'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं, शादी के बाद तेरी भी सेक्स लाइफ होगी, माला.'

'हूँ, पता है, मैंने सब सोचा हुआ है, कैसे मैं अपने पति के साथ खुशनुमा ज़िन्दगी गुजारुंगी.'

'कॉलेज तक तो तेरा कोई अफेयर भी नहीं था, फिर, अब शादी के बारे में क्या सोचा है?'

'मोम – डैड पर छोड़ दिया है. मधु, शादी के बाद मेरा पहला अफेयर, मेरे पति के साथ ही होगा.' उसने मुस्कुराते हुए कहा.

मधु ने एक गहरी मुस्कान से उसको देखा.

माला ने सब सोच लिया था, शादी के बाद पति के साथ कैसी ज़िन्दगी बिताएगी. उसने सपने संजोने शुरू कर दिए थे.

एक दीवानी की तरह वो अनदेखे पति के दिन - रात सपने देखती रहती थी, कि शादी के बाद क्या करेगी और क्या नहीं करेगी. वो अपने पति से बहुत प्यार करेगी, उसे दिलो-जान से चाहेगी, उसको हर तरह से खुश रखेगी.

आखिर, वो दिन भी आ गया जिसका माला दिन-रात इंतजार कर रही थी.

माला की सगाई हो गई, माला बहुत खुश थी. उसने जो सपने संजोये थे, उनको पूरा करने का वक़्त आ गया था.

मन ही मन, वो अपने सपनों को वास्तविक रूप देने लगी. वो बेहद उत्तेजित थी.

राजेश एक अच्छा लड़का था. उसकी मुस्कुराहट ने माला का मन मोह लिया था.

माला अपने मन की बातें राजेश से शेयर करना चाहती थी, फिर उसने सोचा, नहीं, ये सब शादी की पहली रात के लिए छोड़ देती हूँ.

राजेश का फोन दिन में कई बार आने लगा था. वो रोमांटिक बातें करता था जो माला को अच्छी लगती थी. वो हमेशा बाहर मिलने के लिए कहता, पर माला हमेशा उसे टाल देती. वो शादी से पहले राजेश से बाहर कहीं मिलना-जुलना नहीं चाहती थी.

मगर, एक दिन माला उसको ना नहीं बोल सकी.

राजेश घर आ गया उसे लेने, माला तैयार होकर बैठी हुई थी.

दोनों घर से बाहर आकर कार में बैठ गए.

माला ने कहा, 'गार्डन चलते हैं, मुझे वो जगह बहुत पसंद है.'

'ठीक है.' राजेश मान गया.

गार्डन पहुँच कर राजेश ने एक शांत जगह तलाश करी और वो वहां एक खाली बेंच पर बैठ गए.

बैठते ही उसने माला का हाथ पकड़ लिया, माला ने ऐतराज़ नहीं किया, फिर, वो माला की उँगलियाँ सहलाने लगा. माला ख़ामोशी से बैठी रही. उसने कोई आपत्ति नहीं की. माला उसकी तरफ देखने लगी, पर कुछ बोली नहीं.

राजेश का हौंसला बढ़ गया. वो अपना मुंह माला के मुंह के करीब ले आया, अपने होंठों से माला के होंठों को चूमना चाहता था वो. माला ने अपने मुंह पर हाथ रख लिया और दूसरे हाथ से राजेश का चेहरा पीछे किया.

'राजेश, अभी नहीं, शादी के बाद.'

'क्यों, माला?'

'बुरा मत मानना, राजेश, शादी के बाद ये सब तुम्हारा ही होगा, मैंने सोचा हुआ है, ये सब शादी के बाद करेंगे, अगर तुम्हे बुरा ना लगा हो तो मुझे ख़ुशी होगी.

राजेश चुप हो गया.

वो वापस घर आ गए. राजेश, माला को घर छोड़ कर चला गया.

शादी की तारीख तय हो गई.

शादी का दिन भी आ गया.

माला से ख़ुशी संभाली नहीं जा रही थी.

शादी हो गई.

शादी की पहली रात थी.

माला बेड पर सजी फूलों की सेज पर बैठी राजेश का इंतजार कर रही थी.

राजेश कमरे में आया. उसके हाथ में मोबाइल था, शायद वो किसी से बात कर रहा था.

'आई विल कॉल यू टुमारो,' कह कर उसने फोन कट कर दिया.

फिर वो माला के पास आकर बेड पर बैठ गया.

फोन की रिंग बजने लगी. उसने फोन नहीं उठाया, रिंग लगातार बजती जा रही थी.

रिंग बजनी बंद हो गई. राजेश ने राहत की साँस ली. उसने माला से बात करना शुरू किया ही था कि रिंग फिर बज उठी.

राजेश उठा और मोबाइल ऑफ करने के बाद टेबल पर रख दिया. राजेश मुड़ा और उसने माला से कहा कि वो बाथरूम जाकर आता है. यह कह कर वो बाथरूम में चला गया.

इतने में मोबाइल फिर बज उठा. रिंग बजती जा रही थी. माला से रहा ना गया, वो साडी संभालती हुई उठी और टेबल के पास जाकर उसने मोबाइल उठा लिया.

दूसरी तरफ से एक महिला एक साँस में बोल रही थी, 'तुम मेरा फोन क्यों नहीं उठा रहे हो, अपनी दूसरी पत्नी की गोद में लेटे हो ना, दूसरी मिलते ही पहली को भूल गए. सुन लो, मैं तुमको दूसरी सुहाग रात नहीं मनाने दूंगी.....'

दूसरी तरफ से महिला बिना रुके बोली जा रही थी, सुन कर माला के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई, राजेश बाथरूम से बाहर आ गया. माला ने हाथ राजेश की ओर कर दिया. उसकी नज़र माला के हाथ में पकडे मोबाइल पर पड़ी. उसने शीघ्रता से आगे बढ़ कर माला के हाथ से मोबाइल पकड़ कर कट कर दिया और फिर ऑफ कर दिया. उसने मोबाइल टेबल पर रख दिया.

माला बुत बनी खड़ी थी, वो पत्थर हो गई थी. उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया. उसकी टांगों में ताक़त ना रही. उसका शारीर बेजान हो गया. टेबल का सहारा लेकर वो फर्श पर बैठ गई.

राजेश के होश उड़े हुए थे. उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, माला की हालत को देख कर राजेश की ज़बान सूख गई थी.

उसने बची-खुची हिम्मत बटोरी, वो माला को बेड पर लेजाना चाहता था.

उसने झुक कर माला को कन्धों से पकड़ कर खड़ी करना चाहा, माला ने हाथ के इशारे से उसे पीछे रहने को कहा.

'दूर रहो, मुझे छूने की कोशिश भी मत करना.' भर्राई हुई आवाज़ में माला के मुंह से निकला.

माला उठ कर पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गई. उसकी समझ में नहीं आ रहा था, अब क्या होगा? वो क्या करे अब? उसके सपने चूर – चूर हो गए. उसकी आँखों से आंसू बह निकले. उसकी टांगों में ताक़त खत्म हो चुकी थी. उसने टांगे ऊपर करली और कुर्सी

पर सिमट कर बैठ गई और भीगी आँखों से उसने राजेश को देखा. माला ने चुप्पी साध ली थी, वो नफरत भरी नज़रों से राजेश को घूर रही थी.

राजेश उसके सामने बेड के कोने पर बैठ गया. राजेश के दिमाग में चल रहा था कि अब वो माला को कैसे मनाये. उसकी समझ में आ चुका था कि माला को रजनी के बारे में पता चल गया है, अब उसके पास सफाई देने के लिए कुछ नहीं है. माला एक पढ़ी – लिखी समझदार लड़की है.

पूरी रात दोनों उसी स्थिति में बैठे रहे. सुबह होते – होते माला खुद कों संभाल चुकी थी.

'ये महिला कौन है?' माला ने मोबाइल की ओर इशारा करके सख्त आवाज़ में पूछा.

राजेश की हालत खराब थी, उसे बचने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था. उसकी पोल खुल चुकी थी.

माला एक समझदार लड़की है, वो सब समझ चुकी है. उसकी सचाई माला के सामने आ चुकी थी, अब सच बोलने में ही उसको समझदारी लगी.

'रजनी' उसने पहला सच बोला.

'आगे?'

'हम ऑफिस में एक साथ काम करते हैं.'

'आगे?'

'तीन साल से हम relationship में हैं.'

'आगे?'

'एक साल पहले हमने शादी करली थी.'

'मेरी ज़िन्दगी क्यों बर्बाद की? मुझे धोका क्यों दिया? बोलो! मैंने क्या बिगाड़ा था तुम्हारा?' माला ने चीख – चीख कर पूछा और कुर्सी से खड़ी हो गई. वो फूट – फूट कर रोने लगी. फिर वो कुर्सी पर बैठ गई.

राजेश मूक बना बैठ था, उसके पास माला के सवालों का कोई जवाब नहीं था.

कमरे में माला के रोने की आवाज़ गूंज रही थी.

अचानक, माला कुर्सी से उठ कर खड़ी हो गई.

'मुझे इस रजनी को मिलना है.' उसने कठोर शब्दों में राजेश को संबोधित किया.

'रजनी को? लेकिन क्यों?' राजेश हारे हुए खिलाडी की तरह बोला, उसकी आवाज़ शायद माला के कानों तक भी मुश्किल से पहुंची होगी.

'मैंने कहा, मुझे इस रजनी से मिलाओ, आज का आज.'

राजेश के पास कोई पर्याय नहीं बचा था.

'ठीक है.' उसने बेड से उठते हुए अत्यंत दुर्बल आवाज़ में कहा.

कह कर वो बेड के पास खड़ा हो गया.

^

माला ने राजेश को कह दिया था, वो रजनी को लेकर गार्डन में आ जाये और वहीँ रुके जहाँ वो दोनों पहले बैठे थे.

राजेश को घर से निकले दो घंटे से ज्यादा हो गए थे.

माला के आंसू थम नहीं रहे थे, एक ही रात में उसकी ज़िन्दगी कहाँ से कहाँ आ गई. क्या से क्या हो गया, अब उसका क्या होगा? वो क्या करेगी अब? कहाँ जाएगी?

इस तरह के सेकड़ों सवाल उसके दिमाग में घूम रहे थे, पर इस वक़्त उसके पास किसी सवाल का जवाब नहीं था.

वो सोफे पर बैठी गहरी सोच में डूबी हुई थी. आँखों से बहती अश्रु धारा थमने का नाम नहीं ले रही थी. उसको हिचकी बंध गई. रो-रो कर उसकी आँखें सुज गई थी और सुर्ख हो गई थी.

वो सोफे पर उल्टी हो कर लेट गई, उसने आँखें बंद कर ली.

^

माला गार्डन पहुंची.

अपनी सुर्ख और सूजी हुई आँखों को छुपाने के लिए उसने गोगल पहन लिया था.

गार्डन के अन्दर आकर वो उस ओर बढ़ने लगी जहाँ राजेश और रजनी बैठे होंगे.

उसने दूर से ही देख लिया, राजेश और एक महिला, जो रजनी होगी, बेंच पर बैठे थे.

माला उनके नजदीक पहुँच कर रुक गई. राजेश ने उसको देखा.

क्योंकि बेंच पर दो व्यक्ति ही बैठ सकते थे, राजेश उठ कर खड़ा हो गया और माला बैठने के लिए कहा. रजनी, माला को देख रही थी. माला ने भी रजनी को देखा.

माला ने बैठने से इंकार कर दिया और कहा कि वो खड़ी रहेगी, राजेश बैठ गया.

माला खमोश थी, उन दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला.

तीनों के बीच कुछ क्षण ख़ामोशी के गुज़रे.

उसको खड़ी देख कर राजेश खड़ा हो गया, राजेश को खड़ा देख रजनी भी खड़ी हो गई.

माला ने मौन तोड़ा.

वो राजेश को देखते हुए बोली -

‘मैं यहाँ यह कहने आई हूँ, दोबारा किसी को अँधेरे में रख कर उसके साथ विश्वासघात मत करना, किसी की ज़िन्दगी बर्बाद मत करना.’

फिर माला कुछ पल के लिए रुक कर आगे बोली –

‘मैं जा रही हूँ, पता नहीं कहाँ, खुद को सजा देने के लिए...अंधेर में सपने देखने की.....’

राजेश की जुबान को ताला लग गया था, वो कुछ बोलना चाहता था, पर बोल ना सका.

माला अलग हो कर चल पड़ी, राजेश ने उसको रोकना चाहा, मगर माला कई कदम आगे निकल चुकी थी.

राजेश जाते हुए माला की पीठ को देख रहा था.

माला उससे दूर होती जा रही थी.

उसकी छवि धुंधली होती चली गई.

और माला उसकी आँखों से ओझल हो गई.

*****